UGC NET EDUCATION

SAMPLE THEORY

दर्शनशास्त्र

- दर्शन की पाश्चात्य विचारधारा
- पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का वर्गीकरण
  - आदर्शवाद
  - प्रकृतिवाद
  - यथार्थवाद
  - प्रयोजनवाद
  - अस्तित्ववाद
  - मार्क्सवाद
  - मुख्य बिंदु

VPM CLASSES
For IIT-JAM, JNU, GATE, NET, NIMCET and Other Entrance Exams
1-C-8, Sheela Chowdhary Road, Talwandi, Kota (Raj.) Tel No. 0744-2429714
Web Site www.vpmclasses.com E-mail-vpmclasses@yahoo.com

1. दर्शन की पाश्चात्य विचारधारा-

प्लेटो ने अपनी पुस्तक रिपब्लिक में लिखा है जो व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त करने तथा नई–नई बातो को जानने के लिए रुचि रखता है, जो कभी संतुष्ट नही होता उसे दार्शनिक कहा जाता है।

इसकी विचारधारा कई विद्वानों के द्वारा दी गई है जिसमें प्लेटो ने सर्वाधिक योगदान दिया है। प्लेटो एक आदर्शवादी थे तथा प्लेटो के आदर्शवाद से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध तक दर्शन शास्त्र की पुनः रचना करके समाज और शिक्षा मे इसक प्रभाव डाला।

यह विचारधार प्राचीन विचारधारा है तथा यह पाश्चात्य देशों से संबध रखती है क्योंकि इसमे पाश्चात्य देशों के विद्वानों भी योगदान दिया है।

2. पाश्चात्य दर्शनशास्त्र का वर्गीकरण

दर्शनशास्त्र की पाश्चात्य विचारधारा

- ओनोरोलोजी
  वास्वविकता का सिद्धांत
- एपिस्टोमोलोजी
  ज्ञान का सिद्धांत
- एक्सीपोलोजी
  मुल्य का सिद्धांत

- मोनाज्मि
- डुयारालिज्म
  यर्थाथवाद
- प्लुरालिज्म
  प्रयोजनवाद

- आदर्शवाद
- प्रकृतिवाद

विचारधाराऐ

1. **आदर्शवादः** आदर्शवाद दर्शन की वह शाखा है जिसका दर्शन पर सर्वाधिक प्रभाव पडा।

- आदर्शवाद वह विचारधारा है जो यह मानती है कि अन्तिम सत्ता *अध्यात्मिक या मानसिक* है।
- आदर्शवाद पर कई महान विद्वान जैसे डेकार्टे, प्लेटो, वर्कस आदि विद्वानों ने अपने प्रभाव डाले।
- वह विचारधारा मानसिक तत्वों के विचारो सत्यं शिवं और सुंदरम आदि आश्वत मूल्यो में संसार की सर्वोच्च स्थान देती है। वह विचारधारा आदर्शवाद कहलाती है।
- आदर्शवादीयों के अनुसार *मन तथा आत्म* का ज्ञान प्राप्त करना ही केवल विचारों से किया जाता है। आदर्शवादी भिन्नता में एकता के सिद्धांत का समर्थन करती है।

2. **प्रकृतिवादः** प्रकृतिवाद *पदार्थो* को ही जगत का मूल आधार मानता है। इसी कारण इसे भौतिकवाद अथवा पदार्थ वाद की संज्ञा भी दी जाती है। प्रकृतिवादी दर्शन पदार्थ मन तथा जीवन की व्याख्या भौतिक तथा रासायनिक नियमों के द्वारा शक्ति, गति के कार्य कारण संबध की सह–क्रिया पर बल देता है।

- प्रकृतिवाद के अनुसार केवल प्रकृति ही सब कुछ है इससे परे अथवा इसके बाद कुछ नहीं इसी प्रकार प्रकृति की अंतिम सत्ता प्रकृति तथा भौतिक तत्व है।
- प्रकृतिवादी शिक्षा के तीन साधनो प्रकृति, मनुष्य तथा वस्तुओं में केवल प्रकृति को सबसे ऊँचा स्थान देते है।
- प्रकृतिवाद शिक्षा मे बालक के मनौवैज्ञानिक तत्वों–मूल प्रवृतियो, आवश्यकताओं, इच्छाओ, रूचियो, भावनाओं आदि का विशेष महत्व दिया जाता है।
- इस प्रकार प्रकृति के अुनसार अंतिम सत्ता प्रकृति अथवा भौतिक तत्व है।

3. **यथार्थवादः** यथार्थवाद दर्शन की वह शाखा जो विचारों की सत्ता को नकारते हुए वस्तु जगत मे वास्तविक तथा इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को सत्य मानता है।

- इस विचारधारा के अनुसार जो व्यक्ति देखता है तथा जो कुछ उसके सामने है वही सत्य है दूसरे शब्दो मे यथार्थवाद प्रत्यक्ष जगत को मानता है।
- यथार्थवाद संसार को चर तथा अचर, समस्त वस्तुओ को एक अवयव के रुप में मानता है।
- रामतीर्थ के अनुसार ''यथार्थवाद वह विश्वास या सिद्धांत है जो कि संसार वैसा मानता है। जैसा दिखाई देता है, अर्थात संसार रुप और गुण है।''

4. **प्रयोजनवादः** अंग्रेजी शब्द Progmatism की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के प्रेग्मा से हुई है। जिसका अर्थ है किया अथवा किया गया कार्य तथा कुछ विद्वान इसे प्रेग्मोबिकोज मानते है जिसका अर्थ है व्यवहारिकता अथवा उपयोगिता ।

- प्रयोजनवादियो का अटल विश्वास है कि पहले किया अथवा प्रयोग किया जाता है। इसलिए इसे प्रयोजनवादी कहा जाता है

- प्रयोजनवादियो के अनुसार सत्य एक सापेक्ष शब्द है जो व्यक्ति के विकास तथा उसके जीवन मे आने वाली परिस्थितियों के अनुसार बदलता है ।
- प्रयोजन वाद एक उपयोगिता वादी विचारधारा है। जिसके अनुसार प्रत्येक सिद्धान्त की यर्थाथता उसकी उपयोगिता है।
- प्रयोजनवादी जीवन के मूल्यों तथा आदर्श को स्वीकार नही करते क्योकि ये मानवनिर्मित होते है ये भूत मे विश्वास न करके केवल वर्तमान तथा भविष्य मे विश्वास करता है।
- प्रयोजनवादी प्राचीनतम प्रथाओ, परम्पराओ, एवं समाज की प्रचलित रूढ़ियों बन्धनों तथा उलझनो का घोर विरोधी है।

5. अस्तित्ववाद :– शिक्षा के तीन पाश्चात्यदर्शन अस्तित्वाद मार्क्सवादी और यर्थाथवादी का सीमित काल तक कुछ देशो पर ही प्रभाव पडा है। इसकी वजह से जुड़े विद्वानों का अत्यधिक प्रतिक्रिया वादी होना माना गया है।

- अस्तित्ववाद शिक्षा की स्कुली व्यवस्था को सीधा करता है और बच्चों के स्वयं सीखने पर बल देता है। विद्वानों का मानना है कि शिक्षा देने की जगह व्यक्ति का मार्गदशन किया जाऐ प्रकृति से स्वतः शिक्षा हासिल कर व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास होता है।
- अस्तित्ववाद के प्रमुख प्रवर्तक
  1. सोरेन कीर्कगार्ड
  2. कीडरिक नीरवे
  3. जीन पॉल सार्ते
  4. मार्टिन हीडेगार
- अस्तितत्ववाद के अनुसार शिक्षा का निम्नलिखित उद्देश्य है
  1. स्वयं की समझ का विकास
  2. पूर्ण मानव का विकास, तथा
  3. व्यक्तिव का विकास

मूल्यांकन : अस्तित्ववाद के अनुसार शिक्षक शिक्षार्थी सबंध सीधे, सरल व व्यक्तिगत हाने चाहिऐ। यह निराशावादी दर्शन है। अतः उस पर आधारित शिक्षा प्रणाली आध्यात्मिकता व नैतिकता विहीन होकर समाजोपययोगी नही हो सकती ।

6. मार्क्सवादः– मार्क्सवाद दर्शन के प्रर्वतक मार्क्स थे जिन्होने अपने ग्रन्थ '' दास केपिटल'' मे साम्यवादी विचार धारा के सिद्धान्तों पर अपने विचार रखे।

- इस ग्रन्थ की मूल विचारधारा है। ' हर कार्य, वस्तु, ब्यक्ति पर सन्देह करो उसकी इस विचारधारा से इस सिद्धान्त का विकास हुआ। अपने साथी के साथ मिलकर साम्यवाद का प्रर्वतन किया जो मार्क्सवादी के नाम से जानी जाती है।
- इसके स्थान पर लेनिन ने रस क्रान्ति का नेतृत्व किया यह शान्ति वोलशेविक क्रान्ति भी कहलाती है जिससे रूस में साम्यवादी शासन स्थापित हुआ है।
- रूस में मार्क्सवादी और लेनिनवाद की विचारधारा यहाँ शिक्षा प्रणाली को प्रारम्भ कर गया । वहाँ शिक्षा को सर्वोपरी माना गया है।

मार्क्सवाद का शिक्षा पर प्रभाव

1. संरचनाः– 1 से 3 नर्सरी, 4 से 6 किन्डरगार्डन, 7 से 10 प्राथमिक, 18 से 21 शिक्षा निम्नलिखित तीन वर्गो मे विभक्त कि

1) सेकेन्ड्री पोलोटेकनिक 2) टैकनीकल्स 3)व्यवसायिक

- साम्यवादी शिक्षा मे शिक्षक और शिक्षार्थि कठोर अनुशासन में बद्व होकर साम्यवाद में दृढ निष्ठा व राष्ट्र प्रेम का विकास करते है। दोनो की सतत् राष्ट्र व साम्यवाद मे क्रन्द्रित रहती है

साम्यवादी शिक्षा व्यवस्था से प्रकृट होती है वह एकरूपता गुणवता सिद्धान्तों के प्रति प्रभावी हुई वस्तु इसे लोकतांत्रिक देशों में नही अपनाया जाता है।

शिक्षा के उद्देश्य :–

1. विशिष्ट उद्देश्य :– इन्हे '' असामान्य उद्देश्य की संज्ञा दी जाती है। इन उद्देश्यो का क्षेत्र व प्रकृति सीमित होती है।

2. सार्वभौमिक उद्देश्य :– यह उद्देश्य मानव जाति पर सामान्य रू‍ से लागू होते है। इनसे तात्पर्य व्यक्ति के वांछनीय गुणों का विकास करता है। अतः इनका क्षेत्र विशेष स्थान अथवा देश तक सीमित न रहकर सम्पूर्ण मानव जाति है।

3. वैयक्तिक उद्देश्य :– व्यक्तिवादियो के अनुसार समाज की अपेक्षा व्यक्ति बड़ा है अतः वें शिक्षा का वैयक्तिक उद्देश्य व्यक्तिगत शक्तियो को पूर्णरूपेण विकसित करने पर बल देता है।

4. सामाजिक उद्देश्य :– समाजवादियों के अनुसार व्यक्ति की अपेक्षा समाज बड़ा है अतः वे शिक्षा सामाजिक उद्देश्य पर विशेष बल देते है।

मुख्य बिन्दु –

- आर्दशवाद दार्शनिक मनुष्य के व्यक्तित्व को अधिक मूल्यवान समझते है इसलिए वे व्यक्ति तत्व के विकास पर विशेष बल देते है।
- आर्दशवाद वास्तविक पर बल देते है उनके अनुसार अनुयायी जड प्रवृति की अपेक्षा मनुष्य को अधिक महत्व देते है।
- प्रवृतिवाद मनौवेज्ञानिक रूचियो भावनाओ तथा प्रवृति पर बल देता है वह गति शक्ति प्रवृत के नियमों पर भौतिक व रासायनिक बल देता है
- पर्यायवाद वादी भौतिक वाद पर आधारित है। तथा यह व्यावहारिकता, वास्तविक, क्रियाओं और लौकिक जीवन महत्वपूर्ण मानता है।
- प्रयोजिनवाद तथा यर्थाथवाद दोनो की भूमिका निभाने मे अनुभव होता है तथा दोनो वास्तविक व्यवहारिकता ज्ञान की सत्यता पर जोर देते है परन्तु यर्थाथवाद प्रयोजनवाद से भिन्नता लिए हुऐ है।
- यह एक वास्तविक का सिद्धान्त, ज्ञान का सिद्धान्त और मुल्यो का सिद्धान्त पर आधारित है।

VPM CLASSES